UGC Approved Research Journal No. 47816
पंजीयन संख्या RNI No.: MPHIN/2002/9510

ISSN : 2456-8856
डाक पंजीकृत क्रमांक 204/2018-2020 उज्जैन (म.प्र.)

Peer Reviewed Bilingual Monthly International Research Journal

आश्वस्त

वर्ष 22, अंक 201

जुलाई 2020

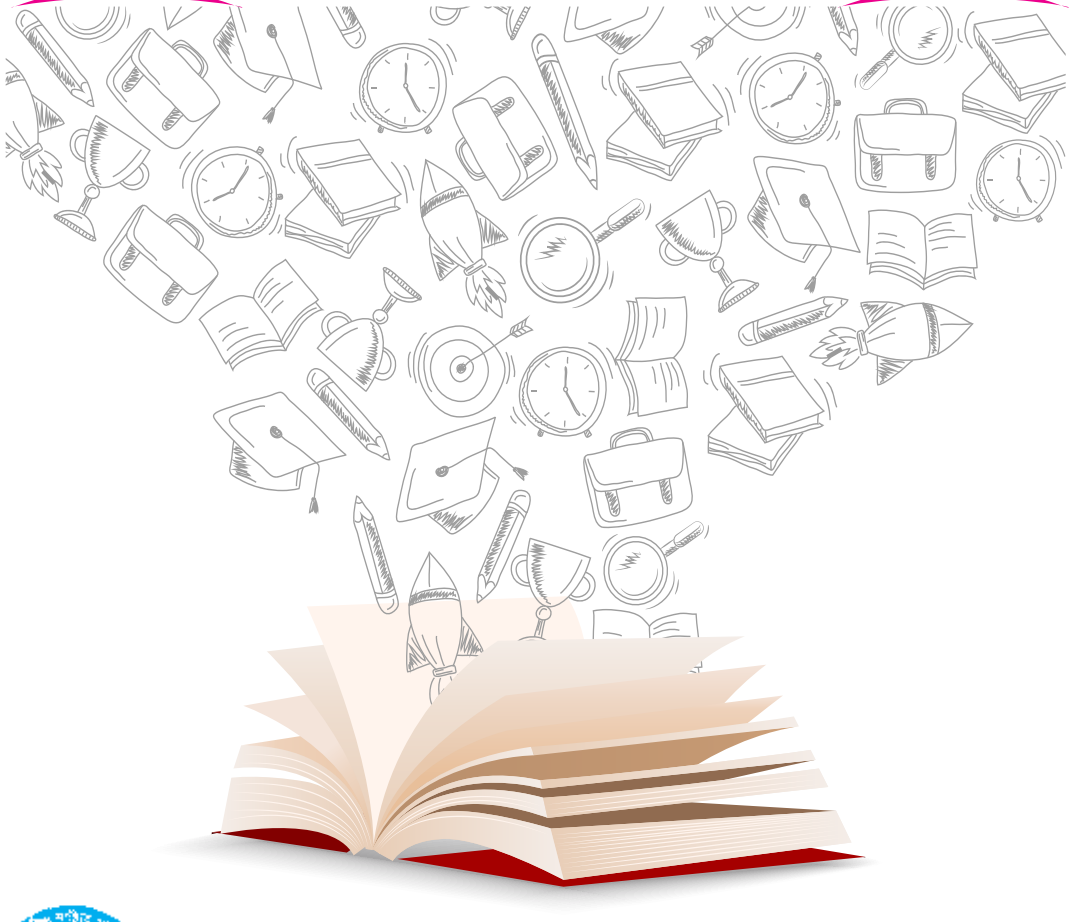

संपादक – डॉ. तारा परमार

भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश, उज्जैन की अन्तर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका

वर्ष : 22 अंक 201
जुलाई 2020

आश्वस्त

(सन् 1983 से निरंतर प्रकाशित)

RNI No.: MPHIN/2002/9510
ISSN : 2456-8856

भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश, उज्जैन (पंजीयन क्रमांक 2327 दिनांक 13/05/1999) की मासिक पत्रिका

संस्थापक सम्पादक
डॉ. पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी

संरक्षक
सेवाराम खाण्डेगर
11/3, अलखनन्दा नगर, बिड़ला हॉस्पिटल के पीछे,
उज्जैन मो.: 98269-37400

परामर्श
आयु. सूरज डामोर IAS
पूर्व सचिव-लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण वि.
म.प्र.शासन, भोपाल मो. 094253-16830

सम्पादक
डॉ. तारा परमार
9-बी, इन्द्रपुरी, सेठी नगर, उज्जैन-456010
मो. 94248-92775

सम्पादक मण्डल :
डॉ. जयप्रकाश कर्दम, दिल्ली
डॉ. खन्नाप्रसाद अमीन, गुजरात
डॉ. जसवंत भाई पण्ड्या, गुजरात
डॉ. शैलेन्द्र कुमार शर्मा, म.प्र.

कानूनी सलाहकार
श्री खालीक मन्सूरी एडव्होकेट, उज्जैन

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	अपनी बात	डॉ. तारा परमार	03
2.	सामाजिक चेतना का आलेख ''कविता में बाबासाहेब डॉ. बी.आर. अम्बेडकर ''	आयु. शेखर	04
3.	अंधविश्वास भगाओं, देश बचाओ	इंजी. आर.सी.विवेक	12
4.	कविताएँ / गज़ल /कुण्डलियाँ /गीत / हाइकू		14
5.	लघुकथाएँ		23

UGC द्वारा मान्यता 47816 प्राप्त पत्रिका
खाते का नाम - आश्वस्त,खाते का नं.- 63040357829
बैंक - भारतीय स्टेट बैंक, शाखा- फ्रीगंज, उज्जैन
IFS Code - SBIN0030108

Web : www.aashwastujjain.com
E-mail : aashwastbdsamp@gmail.com

एक प्रति का मूल्य	:	रुपये 15/-
वार्षिक सदस्यता शुल्क	:	रुपये 150/-
आजीवन सदस्यता शुल्क	:	रुपये 1,500/-
संरक्षक सदस्यता शुल्क	:	रुपये 10,000/-

विशेष : सम्पादन, प्रकाशन एवं प्रबंध अवैतनिक तथा पत्रिका में प्रकाशित विचारों से सम्पादक-मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। विवाद की स्थिति में न्यायालय क्षेत्र उज्जैन रहेंगा।

अपनी बात

कोरोना ने सभी की जिन्दगी प्रभावित की है। अस्थायी रूप से स्कूलों के बन्द होने से शिक्षा के क्षेत्र में एक मोड़ आया है, जिसमें दुनिया भर में बच्चों के लिए ऑनलाइन लर्निंग ही एकमात्र व्यवहारिक विकल्प रह गया है। ऐसा माना जा रहा है। कुछ समय इसे लागू रहने के बाद हमारे यहाँ शासन ने इस पर प्रतिबंध लगा दिया कारण अनेक है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से शिक्षा जगत में अनेक योजनाएं, मॉडल सीखने–सिखाने के लिये बनती रही है, नई शिक्षा नीति भी बनी है, लेकिन एक सर्व मान्य तरीका अभी तक तय नहीं हुआ है। करोनाकाल में बालक, पालक, शिक्षक, चिंतक, विचारक शिक्षा शास्त्री शिक्षा वैज्ञानिक सभी एक तरह से किंकर्तव्यविमूढ़ की स्थिति में है।

यद्यपि साधन–सम्पन्न लोग अपने बच्चों को स्मार्ट फोन द्वारा ऑनलाइन लर्निंग से सहमत हो सकते है लेकिन बहुसंख्यक पालक खासकर के मध्यम वर्ग व निचले स्तर के दिहाड़ी मजदूर, चरवाहे घुम्मकड़, सुदूर ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों के लिये शिक्षा व उनके सीखने– सिखाने की क्या व्यवस्था हो यह प्रश्न सभी के सामने मुंह बाये खड़ा है।

सरकारी, गैर सरकारी सभी क्षेत्र धीरे–धीरे डिजिटल और ऑनलाइन हो रहे हैं इसलिये अब तकनीकी आधारित लर्निंग इकोसिस्टम बनाना और भी जरुरी हो गया है। कहा जाता है कि ऑटो मोबाइल से लेकर और रिटेल तक आज प्रत्येक इण्डस्ट्री में तकनीकी आधारित इनोवेशन हो रहे है, हालांकि एजुकेशन इण्डस्ट्री में बहुत बदलाव नहीं हुए हैं, लर्निंग इकोसिस्टम अब भी अंकों और ग्रेड्स पर ध्यान देता है।

ऐतिहासिक रूप से शिक्षा का उद्देश्य समाज की आवश्यकता के अनुरूप विकसित होता रहा है। हमने पढ़ा और सुना है कि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास करना, चरित्र का निर्माण करना, भले–बुरे में भेद करना बताने से लेकर लोकतंत्र में रहने के लिये तैयार करना, शोषित–वंचितों को राष्ट्र की मुख्यधारा में लाना और औद्योगिकृत 20वीं सदी के लिये कामगारों को तैयार करने तक रहा है।

वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में गुणवत्तापूर्ण शिक्षण, बच्चों को एक्टिव लर्नर बनाना, 'एक तरीका सभी के लिये सही' की धारणा को तोड़ना, शिक्षकों को डिजिटली सशक्त करना, लर्निंग को मजेदार बनाना, शिक्षा तक सबकी पहुंच के लिए तकनीकी का इस्तेमाल आदि बिन्दुओं पर व्यवहारिक आधार पर चिंतन–मनन करने की महती आवश्यकता है।

इक्कीसवीं सदी में शायद हम यह चाहते हैं कि बच्चे ऐसे वयस्क बने जो वैश्विक अर्थव्यवस्था में प्रतिस्पर्धा कर सके और सफलतापूर्वक इसमें बने रहें, लेकिन उस कौशल और ज्ञान का क्या अर्थ, यदि वह छात्र वयस्क होकर अच्छा दोस्त, अच्छा साथी नहीं बन पाए और समुदाय के कल्याण के लिये कुछ काम और योगदान नहीं कर सके। खासतौर पर शिक्षकों के लिए क्योंकि वे ही सभी पेशों के लिये तैयार करते हैं। शिक्षा का मतलब केवल सर्टिफिकेट जुटाना भर नहीं है, बल्कि सही मायने में शिक्षित होना है। संस्कार विहिन शिक्षा का कोई अर्थ नहीं है।

निचोड़ यही है कि यदि हम अपने बच्चों के लिये वाकई कल की दुनिया बेहतर बनाना चाहते हैं तो यह सुनिश्चित करना पड़ेगा कि असली शिक्षा प्रभावित नहीं हो। इसके लिए माता–पिता, स्कूल, शिक्षकों और समाज को एक ही दिशा में सोचना होगा।

डॉ. तारा परमार

सामाजिक चेतना का आलेख : ''कविता में बाबासाहेब डॉ.बी.आर. अम्बेडकर

शेखर

''अनुशीलन के सम्पादक, कवि, चिंतक एवम् विचारक डॉ. युवराज सोनटक्के जी द्वारा अनुदित व सम्पादित मराठी कविता में डॉ. बाबसाहेब आम्बेडकर'' कविता संग्रह को सामाजिक चेतना का आलेख के रूप में रेखांकित किया जाना मुझे योग्य लगता है। डॉ. युवराज सोनटक्के जी कर्नाटक राज्य के बेंगलूरु में रहकर भी हिन्दी साहित्य को योगदान दे रहे है तथा हिन्दी साहित्य को चेतना से समृद्ध करने हेतु साहित्य संघर्ष के अनूठे कार्य में प्रतिबद्धता से कार्यरत है। डॉ. आम्बेडकरजी के शिक्षा कार्य एवं सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक आन्दोलनों के परिणामस्वरूप ठोस रूप में दिखाई देने वाले परिवर्तनों का लेखा–जोखा इस कविता संग्रह में प्रमुखता से प्राप्त होता है। यह कविता संग्रह शोध प्रबंध के रूप में प्रबुद्ध पाठकों, को उपलब्ध हो पाया है। एक सौ नब्बे कवियों की डॉ. आम्बेडकरजी को केन्द्र में रखकर लिखी गई कविताएं कवि डॉ. युवराज सोनटक्के जी ने इस कविता संग्रह में संग्रहित कर उसका स्वयं मराठी से हिन्दी अनुवाद कर उन कविताओं का पुनरीक्षण कर तद्पश्चात् सम्पादन का चुनौती भरा कार्य सहजता से किया है। कविता का अनुवाद पठनीय है। इस कविता संग्रह के पूर्व डॉ. युवराज सोनटक्के जी का एक हिन्दी कविता संग्रह एवं मराठी कविताओं में ''बाप'' शीर्षक कविता संग्रह प्रकाशित हुआ है–

''डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर मराठी कविता में'' की भूमिका में डॉ. युवराज सोनटक्के स्पष्टता से कहते है कि,

''सामाजिक अस्मिता को स्थापित करना साहित्य का मूल उद्देश्य होता है मनुष्य–मनुष्य में बनी हुई खाई को भरकर समतल मंच तैयार करने में साहित्य सिद्धहस्त है। समाज में प्रचलित जातिभेद, वर्गभेद, धर्मभेद आदि के पागलखानों को पूर्णतः ध्वस्त करने की जिम्मेदारी साहित्य निभाता है। समाज के शरीर में जान उड़ेलने का कार्य भी साहित्य करता हैं। साहित्य में कविता विधा रूप से छोटी परन्तु जटिल होते हुए भी कुछ लोगों को दुविधा में डालनेवाली होती है।

कविता परिवर्तन की भावनाओं की संवाहिका भी होती है। वह मन में स्पंदन पैदा करती है। यथार्थ का प्रतिबिंब बनकर व्यवहार का बोझ भी वहन करती है।

इस संकलन की कुछ कविताएँ आम्बेडकरवादी संघर्ष मूल्यों के साथ विचार सम्पदा और कलात्मक ऊँचाई तय करने में सक्षम हैं अधिकांश कविताएं बाबासाहेब डॉ. बी.आर. आम्बेडकर जी का मनोज्ञ व प्रगल्भ जीवन दर्शन और समता संघर्ष–आन्दोलन का विश्वज्ञान उजागर करती है। भाषा और साहित्य का करीबी और नैतिक रिश्ता है।

अनुवादों से भाषा के प्रचार में मदद मिलती है। सम्पर्क स्थापित करने हेतु अनुवाद, ज्ञान संवाहक का महत्वपूर्ण कार्य करता है।

(भूमिका पेज नं. 13, 14 एवं 19)

बाबासाहेब डॉ. आम्बेडकर के प्रेरक विचारों के सम्बन्ध में सबसे वरिष्ठतम मराठी कवि अण्णा भाऊ साठे जी कहते है कि,

''बदलो दुनियाँ को, हथोड़ों की प्रहारों से
कह गये मुझे, बाबासाहेब बारम्बार।''

(पेज नं. 23)

वरिष्ठ कवि डॉ. (प्रो.) यशवन्त मनोहर जी अपनी कविता में कहते है कि,

''बाबासाहेब ज्वालामुखी के झरने के नीचे खडे
होकर निर्माण किया आपने चांदनियों का अंतरिक्ष
बुझे हुए हाथों में दी आपने क्रान्ति की बिजलियाँ
पराभूत आँखों के आगे रखा समारोह सपनों का
और किया अनुवाद दर्दनाक रातों का
समाजवादी संग्राम में.....
बाबासाहेब !
छः दिसम्बर 1956 के पश्चात् दुनियां आपको मौत

पर विजय पाने वाले जीवन नायक के रूप में पहचानती है। मृत्यु को पढ़ाया आपने उजाले का सम्मान करने का पाठ'' (पेज नं. 28 एवं 29)

वरिष्ठ कवि स्मृतिशेष डॉ. वामन निम्बालकर बाबासाहेब डॉ. बी.आर. आम्बेडकरजी के समतामूलक समाज निर्माण के प्रयासों की व्याख्या करते हुए स्पष्टता से कहते है कि,

''बाबासाहेब!
अपने चैन की खातिर,
एक पल भी गँवाया नहीं व्यर्थ
मानव हित हेतु की जिन्दगी खर्च
जहाँ थकान मिटाने के लिए
जिन्दगी विराजती है बिछोनों पर
उस समय
आप बो रहे थे सुरंग
ध्वस्त करने हजारों सालों का
ऊँचा और सख्त हुआ जातियता का शिखर''

('महायुद्ध' संग्रह से साभार पेज नं. 30)

बाबासाहेब डॉ. आम्बेडकर के मार्गदर्शन में बौद्ध धर्म को स्वीकार करते हुए समग्र परिवर्तन को रेखांकित कर कवि त्र्यम्बक सपकाले जी कहते है कि,

''बाबासाहेब!
आपने थमाई मुझे पीपल की टहनी
और मैं आ पहुँचा सम्पर्क में विवेक
विचार–उजालों के''

('ब्रोकन मेन' कविता संग्रह से साभागर पेज नं. 31)

बाबासाहेब डॉ. आम्बेडकरजी के महापरिनिर्वाण के बाईस साल बाद सन् 1978 में लिखी गई कविता में कवि (स्मृतिशेष) प्रो. केशव मेश्रामजी बाबासाहेब की विरासत संभालने हेतु संघटित होकर गंभीरता से कार्य करने की आवश्यकताओं को रेखांकित कर निर्भीकता से कहते है कि,

''बाबासाहेब!
आपके महापरिनिर्वाण को
वैसे तो हो गए पूरे बाईस साल
किन्तु हमारी देह पर यौवन का एक भी निशान
क्यों नहीं ?
कूड़ाघर जैसे बढ़ती जा रही है हमारी लटें
नादान बच्चों सी आदतें हमारी क्यों नहीं जाती?
बाईस साल, बड़ा लम्बा अर्सा होता है
बाप किस का नहीं मरता
किंतु हर कोई ऐसे हाथ–पर हाथ धरे निठल्ला
कोई नहीं बैठता।''

('जुगलबंदी', संग्रह से साभार, पेज नं. 32)

वरिष्ठ कवि स्मृतिशेष दया पवार जी बाबासाहेब डॉ. अम्बेडकर के समतामूलक कार्यों से जले–भूले जातिवादी लोगों की प्रतिक्रियाओं को धिक्कारते हुए कहते है कि,

बाबासाहेब!

''तूफान–आँधी, बिजली की कड़कड़हाट के बीच भी आप अकेले सूरज की तरह प्रखर बनकर उभरे
निठल्ले बहरे–अन्धे लोगों ने शोर मचाया कि,
''लोकतंत्र के घने विशाल पेड़ में लगे
आप कड़वे फल हो''
क्योंकि,
आपके प्रयास से सनातन ऊँच–नीचता की घिनौनी
परम्पराएँ होने लगी ध्वस्त
इसीलिए की जा रही है आपकी अनदेखी
सुनाई जा रही है सजा काल कोठरी की

('कोंडवाडा', कविता संग्रह से अनुदित, पेज नं. 34)

कवि प्रल्हाद चेन्दवणकर जी बाबासाहेब शीर्षक की अपनी लम्बी कविता का समापन करते हुए कहते है कि,

''बाबासाहेब!
आपने दिखाएं हमें फूले, कबीर और बुद्ध
आपने दिए हमें अंजुली भर–भरके शब्द''

('ऑर्डर–ऑर्डर' कविता संग्रह से साभार, पे. नं. 37)

वरिष्ठ कवयित्री हीरा बनसोडे की कविता बाबासाहेब डॉ. आम्बेडकर जी द्वारा दलितों की स्वतंत्रता एवं समग्र उन्नति हेतु किए गए आन्दोलनों के सकारात्मक परिणामों को निर्भीकता से रेखांकित कर स्पष्टता से कहती है कि,

बाबासाहेब!
आपके उजियारे आगमन से ही
खिलने लगी है हमारे आशा–आकांक्षाओं की
सूरजमुखी, सूर्योन्मुख होकर
उज्जवल भविष्यों को मुट्ठी में बाँधकर
अब मुझे ऊँची उड़ान लेनी ही चाहिए
मेरी कविता गुनगुनाने लगी है पंछियों के साथ
आपने तो सारा का सारा रख दिया है हमारे हाथ।

(पेज नं. 38)

दलित पैंथर के संस्थापक महासचिव रहे कवि एवं विचारक ज.वि. पवार की 'पचास वर्षों से' शीर्षक की कविता बाबासाहेब डॉ. आम्बेडकरजी के युगप्रवर्तक कार्य पर प्रकाश डालते हुए निर्भीकता से कहती है कि,

बाबासाहेब!
आप जब दलितों को शिक्षित एवं जागृत करने
निकल पड़े तब
चारों ओर अंधेरा था
राह में अनगिनत गड्ढ़ों ने किया स्वागत आपका
ठोकरे खाई, हुए लहूलुहान, कभी धमकिया मिली
फिर भी आगे ही बढ़ते रहे आप
और पीठ पीछे उफनता रहा समुन्दर
आप हुए हालातों पर सवार
और रचा युगप्रवर्तक इतिहास
आप हुए महानायक, युगपुरुष सदियों से मूक समाज के
आपने जाग्रत किया समूचा बहिष्कृत भारत

(पेज नं. 39)

पहली पीढ़ी की वयोवृद्ध कवयित्री सुगंधा शेण्डे जी अपनी कविता बाबासाहेब डॉ. आम्बेडकर जी के जाति निर्मूलन के चुनौती भरे तथा युग प्रवर्तक कार्य को रेखांकित कर उनके इस कार्य के प्रति आदर भाव व्यक्त कर विनम्रतापूर्वक कहती है कि,

बाबासाहेब!
आप निकल पड़े निर्मूलन करने
जड़े से जातियता का
आप अडिग रहे
और तूफान भाग खड़ा हुआ
धरते है हम सभी आपको
आपको आहिस्ता से अपने कांधों पर
जयघोष करते हुए, शान से मन की पालकी में बिठाकर

(पेज नं. 44)

कवि भीमसेन देठे जी 20 मार्च 1927 के चवदार तालाब आन्दोलन की युगप्रवर्तक भूमिका को रेखांकित कर निर्भीकता से कहते है कि,

''मानवता के घोषणा पत्र से
होने लगे कंपित अत्याचारी, दमनकारी
बाबासाहेब!
खोल दिये उजालों ने अपने दरवाजे
आज हम गर्दन ऊँची किए
करते है जाति–धर्म की दीवारें तोड़ने का आगाज।''

(पेज नं. 47)

स्मृतिशेष कवयित्री डॉ. ज्योति लांजेवार बाबासाहेब के युगप्रवर्तक कार्य को प्रणाम कर आदरयुक्त शब्दों को कविता में व्यक्त कर स्पष्टता से कहती है कि,

''बाबासाहेब! आप संविधान के शिल्पकार
स्वतंत्रतापूर्वक गाएगें हम समूहगान
यह हमारा देश, यह हमारा आकाश
आप क्रान्ति सूर्य, आपको हम करते है प्रणाम।''

('दिशा' कविता संग्रह से अनुदित, पेज नं 50)

''कविता में डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर'' कविता संग्रह के सम्पादक, विचारक, कवि डॉ. युवराज

सोनटक्के की'' अग्निपुरुष डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर'' शीर्षक की कविता निर्भीकता से सच्चाई पाठकों को बताते हुए स्पष्टता से कहती है कि,

''बाबासाहेब!
आप मेहनतकशों की आजादी का उद्‌गम
सारे श्रमिकों की बुलन्द आवाजों का ज्वालामुखी...
आज भी आपकी अग्निशाला की बुलन्द विस्फोटक ऊर्जा
आपकी साँसों की हवाओं के संदेशों में जीवित है।''

(पेज नं. 54 और 55)

वरिष्ठ कवयित्री सुरेखा ताई भगत जी की कविता बाबासाहेब के विचारों की अपने सहूलियत के अनुसार व्याख्या करने वालों को धिक्कारते हुए तथा व्यंग्य एवं उपहासात्मक शैली में अपने भावों को निर्भीकता से व्यक्त कर दो टूक शब्दों में कहती है कि,

''बाबासाहेब!
आपके विचारों को षड़यंत्रकारी अपने हिसाब से पढ़ता है
और समाजवाद का मुखौटा अपने असली चेहरे पर धरता है...
आज भी आग लगाने वाले
और बलिराजा के न्याय मण्डप में असलो
हथियारों को लेकर बैठने वाले हमलावर
कर्ता–धर्ता है।'' (पेज नं. 57)

बाबासाहेब डॉ. आम्बेडकर जी के सूर्य की भाँति प्रखर एवं जीवनदायनी व्यक्तित्व को स्पष्टता से रेखांकित कर प्रो. दामोदर मोरे जी की कविता बाबासाहेब के जीवन कार्य का निचोड़ प्रबुद्ध पाठकों के सामने निर्भीकता से रखती हुई कहती है कि,

''बाबासाहेब!
आप हो ऐसे
सदियों, सदियों के अंधियारे युग में
प्रखर, तेजस्वी सूरज हो जैसे (पेज नं. 59)

वरिष्ठ साहित्यकार लेखक, कवि स्मृतिशेष पद्‌मश्री दया पवार जी की बेटी कवयित्री प्रो. प्रज्ञा पवार की कविता बाबासाहेब के व्यक्तित्व को शब्दों द्वारा साकार करते हुए स्पष्टता से कहती है कि,

''चैत्यभूमि की उमड़ती हुई विशाल जनता के बीच
मोमबत्ती से छलकने वाले उजालों में
मेरी ऊँगली थी पिताजी की मुट्‌ठी में
मुझे याद है बाबासाहेब
तब से आपका नाम कुरेदा था मैंने
अपने कलेजे पर'' (पेज नं. 62)

भारत की आदिवासी गोंडी भाषा में अपनी काव्य रचना कर आदिवासी साहित्य एवं संस्कृति के क्षेत्र में सक्रिय कवयित्री उषा किरण आत्राम जी बाबासाहेब डॉ. आम्बेडकर जी के जीवन कार्य को स्पष्टता से रेखांकित कर निर्भीकता से कहती है कि,

''अंधेरों में पड़े धूल कणों को सहलाकर
सोना किया आपने
मूक, बधिर, पंगु अंधों को भी
अस्मिता से परिपूर्ण जीवन लक्ष्य दिया आपने''

(पेज नं. 64)

वरिष्ठ साहित्यकार, समीक्षक, रंगमंच कलाकार एवं सावित्रीबाई फूले नाटक में एकपात्री भूमिका अविस्मरणीय निभानेवाली कवयित्री उषा अम्भोरे की कविता बाबासाहेब के जीवन कार्यों को रेखांकित कर स्पष्टता से कहती है कि,

''बाबासाहेब!
आपने वृक्षारोपण किया हुआ बोधिवृक्ष
अब पूरी तरह पेड बन कर फलें–फूलें
से लहरा रहा है
प्रबुद्ध जनता की पंक्ति में सम्मानित हुआ है''

(पेज नं. 91)

कवयित्री मीना गजभिये अपनी कविता के माध्यम से पाठकों को बाबासाहेब के कार्यों से अवगत कराते हुए कहती है कि,

''युग–युग की काली घटाओं से व्याप्त
गगन में
सूरज हमारा उदित हुआ''

('निकाय' पत्रिका के अगस्त 1976 के अंक से अनुदित पेज नं. 96)

डॉ. (प्रो.) संध्या रंगारी जी की कविता बाबासाहेब के कार्यों को बड़े ही मनोभावों से रेखांकित कर कहती है कि,

''क्रान्ति सूर्य बाबासाहेब!

आपके अनमोल अस्तित्व और दहाड़ से

गूंज उठा था आसमान भी

चिंगारी उठी थी पानी में

और हमारी धमनियों से बहने वाला लहू

आपके सम्पर्क केकारण उछाले मार रहा था।''

(पेज नं. 109)

कवि विद्याधर बनसोड की कविता निर्भीकता से दलित–शोषित समाज की अस्मिता का आशय निर्भीकता से व्यक्त कर स्पष्टता से कहती है कि,

''आप हमारे बाबासाहेब

इसलिए हमें नाक है

दीवार पर केवल आपका फोटो भर है

फिर भी घर में धाक है।'' (पेज नं. 114)

प्रो. आशालता काम्बले जी की कविता बाबासाहेब के कार्यों को कुछ इस तरह पाठकों के सामने रख सच का बयान कर कहती है कि,

''बाबासाहेब!

निडर बनाने के लिए

दिन–रात की जुगत

और अपना लहू औटाया आपने'' (पेज नं. 130)

कवि ऐश्वर्य पाटेकर एक कवि के रूप में अपनी सीमाओं को निर्भीकता से स्पष्ट कर कहते है कि,

''महासूर्य बाबासाहेब!

मैं लिखना चाहता हूँ आपको केन्द्र में रखकर कविता

किन्तु आपके जीवनकार्य को ठीक से व्यक्त कर पाए

ऐसे सटिक शब्दों की खोज में लगा हूँ मैं।''

(पेज नं. 136)

कवयित्री कविता मोर वणकर अपनी कविता द्वारा बाबासाहेब के कार्यों को पाठकों के समक्ष रखते हुए कहती है कि,

''चोंच थी जिन लोगों की शिकंजों में जकड़ी हुई

उन गूँगों के आजादी के तराने हुए

हमारे बाबासाहेब

दिखाई उजली राह इन्सान होने की

समूचे संविधान में व्यक्त हुए

हमारे बाबासाहेब। (पेज नं. 144)

कवयित्री उषा हिंगोणेकर की कविता अंधकार को निर्भीकता से नकारने का संकल्प व्यक्त कर बाबासाहेब के आन्दोलनों को याद कर स्पष्टता से कहती है कि,

''करा दिया आपने एहसास

गुलामी से भरे जीवन का

उजाले की ओर बढ़ने का संकल्प कर

नकारती हूँ अंधेरे का निवास

बाबासाहेब!

आप हो हमारी साँस

अब घटित होगा नया इतिहास'' (पेज नं. 151)

कवयित्री छाया कोरेगाँवकर जी की कविता स्पष्टता से कहती है कि,

''बाबासाहेब!

अब सबकी जुबाँ पर केवल आपका नाम है....

और यहाँ के फूल, पेड़, पौधे भी अब

महासता का गीत गाने लगे है।'' (पेज नं. 155)

कवि सुनील काम्बले आज की युवा एवं शिक्षित पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते है। इस पीढ़ी ने भले ही प्रत्यक्ष रूप में बाबासाहेब को और उनके कार्यों को देखा ना हो किन्तु उनकी कविता शपथपूर्वक प्रमाणित करती है कि,

''बाबासाहेब!

मैं आपसे अक्सर मिलता हूँ कई–कई बार

किताबों के पन्नों में, गली–चौराहों में,

झुग्गियों में....

आपको कभी देखा नहीं, फिर भी बहते हो

शरीर की नसों–नसों में लहू के रूप में आप।''

(पेज नं. 157)

प्रो. शुक्राचार्य गायकवाड़ की कविता बड़े ही आश्वस्त अंदाज में बाबासाहेब के कार्य को व्यक्त कर कहती है कि,

''बाबासाहेब!
आपके संविधान का जस–तस एक पन्ना
मेरे गाँव में आया
और सदियों से सूना तथा अंधेरों में गुम–सुम मेरा गाँव
उजालों से भर गया
एक प्रकाश किरण आयी
और भोर भई गाँव में।'' (पेज नं. 164)

कवयित्री वन्दना महाजन की कविता स्त्री को समानता का अधिकार दिलाने वाले महामानव के रूप में बाबासाहेब के कार्य को अभिवादन कर कहती है कि,

''बाबासाहेब!
अपनी विराट आँखों से देखे आपने
सम्यक् समानता के सपने....
मनुष्य के मन के मतलबी जालों को जलाया आपने
और लिखी हिन्दू कोड बिल की संहिता
इस देश की महिलाओं के लिए.....
बाबासाहेब!
आप वैश्विक महानवता को आवाज देने वाले
सम्पूर्ण मानव हो'' (पेज नं. 166 और 167)

कवयित्री संध्या ताम्बे की कविता बाबासाहेब के समता के आन्दोलन का उत्तराधिकारी बनने का संकल्प घोषित कर निर्भीकता से अपनी बात प्रबुद्ध पाठकों के समक्ष रखते हुए स्पष्टता से कहती है कि,

''प्रज्ञासूर्य बाबासाहेब!
आपका उत्तराधिकारी बनने की आकांक्षा
यथार्थ रूप में साकार करने की शक्ति और ऊर्जा
शायद मुझ में ना हो
किन्तु कम से कम आपके समता आन्दोलन की ध्वजा
हाथ में लेकर आगे बढ़ने का संकल्प एवं बल
मुझ में तो है ही।'' (पेज नं. 168)

कवयित्री विजया लक्ष्मी वानखेड़े की कविता बाबासाहेब की अहिंसा के रास्ते पर चलने की सीख को रेखांकित कर निर्भीकता से कहती है कि,

''बाबासाहेब!
हमारे विरोधियों के बेतुके शब्द
और संविधान विरोधी भाषा को
हम सहते है, चुपचाप बिना बौखलाए शान्ति से
क्योंकि, आपने दी हमें बुद्ध की राह...
अब भी जलाए जाते हैं घर बार हमरी आँखों के सामने
लूटी जाती है अस्मत
किए जाते हैं खून–खच्चर
किन्तु संवैधानिक मार्ग से हम निकालते है धिक्कार मोर्चे
और दर्ज करते है शोषण, दमन, अन्याय, अत्याचार का निषेध
क्योंकि, आपने हमें बुद्ध की राह पर चलना सिखाया।''
(पेज नं. 169)

कवयित्री प्रतीक्षा गंगावणे–गायकवाड़ की कविता बाबासाहेब के प्रयासों से प्राप्त सामाजिक स्वतंत्रता को रेखांकित कर निर्भीकता से सहती है कि,

''बाबासाहेब!
अब हम लेने लगे हैं साँस खुली हवा में
पढ़ने और बतियाने लगे है शिक्षा पाकर...
(पेज नं. 180)

मराठी पत्रिका ''अण्णा भाऊ साठे मत'' की सम्पादक डॉ. (प्रो.) नन्दा तायवाडे की कविता कहती है कि,

''बाबासाहेब!
अब हर मौसम में आपके बिना बहार आती नहीं
चान्दनी भी अब आपके बिना खिलती नहीं
मानवता को है अब आपके संकलप का मनन
शाश्वत है इन्सानों के तन–मन में आपकी ही लगन।''
(पेज नं. 181)

कवयित्री सीमा भसारकर–पाटील की कविता

बाबासाहेब के संघर्षों को याद कर स्पष्टत से कहती है कि,

''बाबासाहेब!
दुनिया ने देखा आपको यहाँ संघर्ष करते हुए
हमारे अधिकारों के लिए आपको
तमाम आन्दोलन कर पहाड़ होते हुए
घने अंधियारों में उजाले के शिल्प उकेरते हुए
आपको देखा इतिहास ने दहाड़ते हुए।''
(पेज नं. 186)

कवयित्री माया दामोदर की कविता बाबासाहेब द्वारा दिखाए गए प्रबुद्ध राह पर चलने का आग्रह कर स्पष्टता से कहती है कि,

''चलो, प्रज्वलित करे समता की ज्योति
धम्म प्रचार–प्रसार को देकर गति
आओ, हम सभी बाबासाहेब की संकल्पना की
फूलवारी सजाए
हम सब संताने, एकता का संगठन
बनाए।'' (पेज नं. 190)

कवयित्री प्रतिभा जाधव निकम जी की कविता बाबासाहेब द्वारा गठित समता सैनिक दल के महत्व को रेखांकित कर स्पष्टता से कहती है कि

''बाबासाहेब! आपने रचा मानवता का सूक्त
आपका हर एक सैनिक करता है समता की घोषणा
हमें पूरा है विश्वास कि
समता रूपि आसमानी रंग–रूप में
दिखाई देगा भारत सारा.... (पेज नं. 206)

कवि अजीज खान पठान की कविता मुस्लिम समाज में व्याप्त शिक्षा के अभाव को स्पष्टता से रेखांकित कर बाबासाहेब के शिक्षित बनो के संदेश और मार्गदर्शन को स्पष्टता से व्यक्त कर निर्भीकता से कहती है कि,

''बाबासाहेब!
अजान के सूर पड़ते ही कानों पर
चौराहे में स्थित आपके पुतले को नजरअंदाज कर
मस्जिद की ओर सरपट दौड़ने वाले हमारे पैर
अब थक गए है क्या ?
अथवा कट चुके है क्या?
बाबासाहेब!
आपकी ऊँगली करती ही रही इशारा
मस्जिद के उस पार की पाठशाला की ओर
बाबासाहेब!
आपकी धारदार ऊँगली में
हजारों सालों का बुर्का
नेस्तनाबूद करने की बात है
अजान का भी वक्त हो रहा है...'' (पेज नं. 211)

कवयित्री निर्मला लोढ़े जी की कविता बाबासाहेब डॉ. अम्बेडकर जी क आदर्श समाज स्थापना के संकल्प की आवश्यकता को स्पष्टता से रेखांकित कर दृढ़ निश्चय होकर कहती है कि,

''क्रान्ति सूर्य बाबासाहेब!
आपने देखा सपना आदर्श समाज का
और सह ली शोषण–दमन की सारी वेदना
उमड़ पड़ा जिगर आपके मातृत्व की ममता का''
(पेज नं. 218)

कवि सफरअली इसफ की कविता अपने दुःखों का इजहार कर स्पष्टता से कहती है कि,

''बाबासाहेब!
आपको विनम्र अभिवादन करते हुए
खुशी समाती नहीं मन में
प्रतिमा के उस पार विचारों में भी खोजते हुए
आप ही दिखने लगे मुझे अपने ही मुहल्ले में
देशद्रोह की तोहमत सहते हुए
यहाँ गूँगों के भी आप बने आधार
व दिया आपने जीने का अधिकार

आपके लोकतांत्रिक मूल्यों में....

धर्मवाद की दीवारें दूर कर जीने की राह मिलती रही

यह आपके विचारों की दिलदारी

गद्दारी के दाग मिटाने के लिए पर्याप्त है

सर्वत्र मिलाता रहा आपकी ही निधर्म ममता का आधार

आपने ही बहाल किए हुए लोकतंत्र के विचारों पर

अभी शाबूत हैं इस माटी में

कोई भी जाति, धर्म, मुहल्ला...''(पेज नं. 225)

कवयित्री डॉ. शुभा प्रशान्त लोंढे की कविता बाबासाहेब के विचारों को अपनाकर शिक्षित बने युवा पीढ़ी के अन्याय–अत्याचार, शोषण के विरोध में उठाव करने की उमंगों को व्यक्त कर कहती है कि,

''बाबासाहेब!

क्रान्तिकारी ज्वालामुखी की ललकार हूँ मैं

धधकती हुई अंगार हूँ मैं

समता की समग्र लहर

एवं आकांक्षाओं की भोर हूँ मैं...'' (पेज नं. 229)

कवयित्री प्रज्ञा घोडेस्वार–बागूल की कविता स्वतंत्रता एवं समता प्राप्ति हेतु किए गए आन्दोलनों को रेखांकित कर स्पष्टता से कहती है कि,

''शब्द–क्रान्ति के उपवन में लाने हेतु बहार

भूलना नहीं चाहिए महाड़ का चवदार तालाब

आने दीजिए विचारों का उफान बदलाव की लहरों पर

गुलाम मानसिकता की भीड किस काम की

हम चलेंगे बाबासाहेब की समता व न्याय की राह पर''

(पेज नं. 232)

बाबासाहेब डॉ. अम्बेडकर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर केन्द्रित कविता संग्रह की कविताओं में सामाजिक स्वतंत्रता एवं समता के साथ–साथ शिक्षा के अधिकारों के सही क्रियान्वयन भारतीय जनमानस को एक समान प्राप्त हो, यह आकांक्षा स्पष्टता से अभिव्यक्त हुई जान पड़ती है। इस कविता संग्रह की तमाम कविताएं स्वतंत्रता, समता, न्याय, भाईचारा एवं विज्ञान दृष्टि से समृद्ध होकर आम्बेडकरवादी लोकतांत्रिक विचारधारा का प्रतिनिधित्व करती है और सम्यक ज्ञान को स्वीकार का आग्रह कर भाषा, साहित्य एवं मानवी संस्कृति को नैतिक आचरण का स्वीकार करने का विनम्र अनुरोध करती है एवं लोकतांत्रिक मूल्यों को स्थापित करने हेतु साहित्यिक योगदान देकर कर्तव्यबोध को रेखांकित करने का तथा समतामूलक समाज की स्थापना और इस बात के साथ ही साथ विश्व में साम्प्रदायिक हिंसा चार से उत्पन्न संहार की त्रासदी एवं यातना से पृथ्वी को सुरक्षित रखने का न्यायपूर्ण आग्रह करती है। इस दृष्टि से यह काव्य संकलन विश्व शान्ति एवं सद्भाव को अक्षुण्ण रखने हेतु किए जाने वाले प्रयास एवं समतावादी विचारधारा के साहित्यिक क्रियान्वयन हेतु मौलिक दस्तावेज बनकर प्रबुद्ध पाठकों से लगातार संवाद करने की चाहत स्पष्टता से व्यक्त करती दिखाई देती है तथा

''युग–युग से किया जिन्होंने

विषमता का विष प्राशन

कंधों पर जिनके सुदृढ़ हुआ शोषकों का सिंहासन

रग–रग में जिनके क्रान्ति करती है सिंगार

बसा है जिनकी दहकती आँखों में संघर्ष का अंगार''

उन सभी समता सैनिकों के संघर्षों को समर्पित यह कविता संकलन शोषण, दमन रहित कल्याणकारी दुनियां की कामना को दृढ़ता से व्यक्त कर समता एवं मानवता में यकिन रखने वाले सभी प्रबुद्ध लोगों से नजदीकियां बनाता है और सभी को आजादी से व विवेकपूर्ण जीवनयापन करने हेतु ऑक्सीजन प्रदान

ए–106, हिल अपार्टमेंट, रोहिणी,
सेक्टर–13, दिल्ली–110085
मोबा. 9873843656

अंधविश्वास भगाओ, देश बचाओ

✍ इंजी. आर.सी. विवेक

न जच्चा वसलो होति, न जच्चा होति ब्राह्मणो ।
कम्मुना वसलो होति, कम्मुना होति ब्राह्मणो'ति।।

(सु.नि., वसल सुत्त)

अर्थ : जन्म से न कोई वसल (नीच) होता है और न जन्म से कोई ब्राह्मण, लेकिन कर्म से ही मनुष्य वसल (नीच) होता है और कर्म से ही ब्राह्मण।

संसार में करीब 40 देश बुद्ध की इस फिलोसफी को मानते हैं, मगर भारत देश ही एकमात्र ऐसा देश है जहां बुद्ध की इस विचारधारा को नहीं मानते। भारत ने मनुष्य के जन्म को लेकर ऐसा आविष्कार किया है जिसे संसार का कोई भी व्यक्ति नहीं मानता। भारत के ब्राह्मणों ने मनुष्य की जाति का आविष्कार किया है। अपने आविष्कार में उन्होंने लिखा है कि मनुष्य की चार जातियां है। यथा–

1. ब्राह्मण : जिनको ब्रह्मा ने अपने मुख से पैदा किया। जिसका काम पढ़ना–पढ़ाना।

2. क्षत्रिय : जिनको ब्रह्मा ने अपनी भुजाओं से पैदा किया। जिसका काम लड़ना–लड़ाना।

3. वैश्य : जिनको ब्रह्मा ने अपने उदर से पैदा किया। जिसका काम व्यापार करना–कराना।

4. शूद्र : जिनको ब्रह्मा ने अपने पैरों से पैदा किया, जिसका काम ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य की सेवा करना। इनको पढ़ने–पढ़ाने का अधिकार नहीं, इनको देश की रक्षा के लिए हथियार उठाने का अधिकार नहीं, इनको व्यापार करने का अधिकार नहीं।

मनुष्य जाति को चार भागों में बांटने का मतलब है कि देश की शक्ति को चार भागों में बांट देना। हकीकत में ब्राह्मण ईमानदारी से पढ़ने–पढ़ाने का काम न कर सके, क्षत्रिय देश की रक्षा न कर सके, वैश्य ठीक से अपना व्यापार न कर सके और शूद्र उपर्युक्त तीनों वर्गों की सेवा में ही लगे रहे। मनुष्य को जातियों में बांटने के कारण ही देश 1000 साल तक गुलाम रहा। अगर शूद्रों को भी पढ़ने–पढ़ाने का अधिकार होता, देश की रक्षा करने का अधिकार होता, व्यापार करने का अधिकार होता और आपस में भाईचारा होता तो देश कभी गुलाम नहीं होता। मगर हमारे देश में झूठ, छलकपट और अंधविश्वास का आविष्कार हुआ और आज भी लगातार हो रहा है। अंधविश्वास के मुताबिक भारत में पुराने समय में जो टेक्नोलॉजी थी, वैसी उन्नत टेक्नोलॉजी किसी भी देश में नहीं पाई जाती। ऐसा झूठ बोलकर भोली–भाली जनता को गुमराह किया जाता रहा है।

1. भारत ही एक अकेला देश है, जहां इंसान की गर्दन में हाथी का सिर जोड़ा गया।

2. भारत ही एक अकेला देश है, जहां मुख, भुजा, जंघा और पैर से बच्चा पैदा हुआ।

3. भारत ही एक अकेला देश है, जहां सूर्य को निगला गया तो किसी देश को पता नहीं चला।

4. भारत ही एक अकेला देश है, जहां चूहे, शेर और पक्षी की सवारी होती थी।

5. भारत ही एक अकेला देश है, जहां शरीर के मैल से विशेष टेक्नोलॉजी द्वारा बच्चा बनाया गया।

6. भारत ही एक अकेला देश है, जहां पत्थर पानी पर तैरते थे और गेंद डूब जाती थी।

7. भारत ही एक अकेला देश है, जहां भालू और बंदर भी पढ़े–लिखे थे।

8. भारत ही एक अकेला देश है, जहां औरत को जुए में हार जाते थे, फिर उसका चीरहरण करते थे।

9. भारत ही एक अकेला देश है, जहां बंदर भी हवा में उड़ते थे।

10. भारत ही एक अकेला देश है, जहां औरत को अग्नि में जलाकर परीक्षा ली जाती थी और औरत सही सलामत अग्नि में से बाहर भी आ जाती थी।

11. भारत ही एक अकेला देश है, जहां सूर्य के आशीर्वाद से बच्चे पैदा किए जाते थे।

12. भारत ही एक अकेला देश है, जहां घास–फूस से बच्चे पैदा किए जाते थे।

13. भारत ही एक अकेला देश है, जहां भालू पुल बनाते थे।

14. भारत ही एक अकेला देश है, जहां जानवरों की पूजा की जाती है और आदमियों के हाथ का पानी पीने से घृणा करते हैं, मगर जानवरों का मूत्र भी पीते हैं।

15. भारत ही एक अकेला देश है, जहां पुजारी कच्चे खाने की दक्षिणा हजम कर लेते हैं और पके हुए खाने से परहेज करते हैं।

16. भारत ही एक अकेला देश है, जहां अपने मंदिर से मिली दान–दक्षिणा के आरक्षण को धर्म मानते हैं और दूसरे के संवैधानिक आरक्षण का विरोध करते हैं।

17. भारत ही एक अकेला देश है, जहां गाय को माता कहते हैं मगर सांड को पिता कभी नहीं कहते।

18. भारत ही एक अकेला देश है, जहां कुत्ते–बिल्ली जैसे जानवरों को तालाबों से पानी पीने का अधिकार है मगर इंसानों को इस तालाब का पानी पीने का अधिकार नहीं था।

इनके शास्त्रों के अनुसार शूद्रों को दण्ड देने का प्रावधान –

1. महाभारत कहती है–शूद्र राजा नहीं बन सकता।

2. गीता कहती है–शूद्र को ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य की गुलामी करनी चाहिए।

3. रामायण कहती है–शूद्र को ज्ञान प्राप्त करने पर मृत्यु दण्ड मिलना चाहिए।

4. वेद कहते हैं–शूद्र ब्रह्मा के पैरों से पैदा हुआ है इसलिए वह नीच है।

5. मनुस्मृति कहती है–शूद्र का कमाया हुआ धन ब्राह्मण को छीन लेना चाहिए।

6. पुराण कहते हैं–शूद्र केवल गुलामी के लिए जन्म लेता है।

7. रामचरितमानस कहती है–शूद्र को पीटना धर्म है, जैसा कि रामचरित मानस में लिखा है–ढोर, गंवार, शूद्र, पशु, नारी। सकल ताड़न के अधिकारी।।

शूद्र के साथ इतने अनाचार, अत्याचार होने के बाद भी एक सहनशील शूद्र इन हिंसक धर्म ग्रन्थों को सीने से लगाए फिरता है। यकीन मानिए यही इनकी गुलामी का कारण है।

दूसरे देशों में जाकर देखने से पता चलता है कि इंग्लैंड में ब्राह्मण मुख से, भुजाओं से क्षत्रिय, जंघा से वैश्य तथा पैरों से शूद्र पैदा नहीं होते।

जर्मनी में भगवान खाना नहीं खाते, तुर्की में भगवान शादी भी नहीं करते, फ्रांस में भगवान 12 लाख के जेवरात नहीं पहनते। इन देशों में लोग विद्वान और बुद्धिमान हैं, वे अपना स्वाभिमान खोना नहीं चाहते। वहां के लोगों का ध्यान अपने अधिकार व देश की सुरक्षा की ओर है। हमारे ही देश में 33 करोड़ देवता और हठधर्मी क्यों चाहिए।

मैं धर्म की गुलामी के लिए ब्राह्मणों को दोषी नहीं मानता। यह तो हमको ही लात खाने की आदत है, वरना ब्राह्मणों ने तो हमें अपने धर्म से दूर रखने की पूरी कोशिश की थी। उन्होंने हमको अपने धार्मिक ग्रंथों को पढ़ने और सुनने से दूर रखा और इसकी अवहेलना करने पर हमारे कानों में पिघला सीसा डालने की सजा का प्रावधान था। उन्होंने हमको धर्म के मंत्रों को आज तक उच्चारित करने से भी दूर रखा और इसे नकारने पर हमारी जुबान काटने का भी प्रावधान था। उन्होंने हमको अपने मंदिरों से भी दूर रखा। उन्होंने अपने ग्रंथों में भी लिखा है कि देवी–देवता सिर्फ द्विजों का भला करते हैं, फिर भी हम लोग वही करते हैं जिनके लिए वे मना करते हैं और दोष ब्राह्मणों को देते हैं। इतना सब कुछ होने के बावजूद भी हम मंदिरों में क्यों जाते हैं? हम रामायण क्यों पढ़ते हैं? हम महाभारत क्यों पढ़ते हैं? हम हिन्दू धर्म को अपना धर्म क्यों मानते हैं?

एक अमेरिकी पत्रकार ने एक भारतीय ब्राह्मण का इन्टरव्यू किया :

पत्रकार–संसार में जहां भी किसी का शोषण हुआ वहां शोषितों द्वारा एक क्रांति की गई। आप भारत में पिछड़ों के साथ पिछले हजारों साल से अत्याचार

करते आ रहे हैं, जिनकी संख्या 75 प्रतिशत है। फिर भी ये लोग शोषण के विरोध में क्रान्ति क्यों नहीं करते?

ब्राह्मण ने जवाब दिया –

1. वे लोग बच्चा पैदा कर सकते हैं, लेकिन अपने बच्चे का नाम हमारे बिना नहीं रख सकते।

2. वे लोग अपने बच्चे की शादी कर सकते हैं, लेकिन हमारे बिना विवाह की तारीख नहीं निकाल सकते।

3. ये लोग कोई भी व्यापार कर सकते हैं, लेकिन हमारे बिना शुभ–मुहूर्त नहीं निकाल सकते।

4. ये लोग अपने मां–बाप के मरने के बाद श्राद्ध जैसी अंधविश्वासी परम्परा पर हमें ही बुलाते हैं व दान देते हैं।

5. ये लोग अपनी जिंदगी के कोई फैसले स्वयं नहीं ले सकते।

6. जिन लोगों को आज भी अपने मां–बाप से ज्यादा देवी–देवताओं पर विश्वास हो, जो लोग कुत्ते–बिल्ली, पेड़–पौधों, विधवा महिला को अशुभ मानते हों, जो लोग शिक्षा से दूर भागते हों, मजदूरी को किस्मत मानते हों, जो लोग रोग (बीमारी) को देवता का प्रकोप मानते हों, ऐसे लोग जिन्हें अपने ऊपर विश्वास न हो, वे क्या खाक क्रान्ति करेंगे?

अज्ञानता से भय पैदा होता है, भय से अंधविश्वास पैदा होता है, अंधविश्वास से अंधभक्ति पैदा होती है, अंधभक्ति से व्यक्ति का विवेक शून्य हो जाता है और वह इंसान मानसिक गुलाम हो जाता है। दुनिया को लम्बे समय तक बेवकूफ नहीं बनाया जा सकता। लेकिन धर्म एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें लोग पीढ़ी–दर–पीढ़ी मूर्ख बनते रहते हैं।

बर्बाद गलिस्तां करने को
बस एक ही उल्लू काफी है,
यहां तो हर शाख पर उल्लू बैठा है,
अंजाम ए–गुलिस्तां क्या होगा?

ई–3/29, सैक्टर–16, रोहिणी दिल्ली
मोबा. 9891342732

कविताएँ

अम्बेडकर ने उबारा है

बी.एल. परमार

अम्बेडकर को मूर्ति बनाकर छोड़ दिया
अनुयायी बन मकसद अपना जोड़ लिया
संस्था बनाकर धंधा अपना खोल लिया
बाबा का मिशन मक्कारों ने मोड़ दिया।

नाम के खातिर आपस में विष घोल दिया
इन धंधे बाजों ने बाबा को बदनाम किया
लगा फोटो उनकी अपना कारोबार किया
इन गद्दारों ने बाबा का शोषण खूब किया।

सारे नेता कहते हम बाबा के अनुयायी हैं
उनके आदर्शों पर चलने की कसम खाते हैं
बंधक अपने दल के गीत उसी के गाते हैं
बहुजन के खातिर किसने कुर्सी त्यागी है।

अब भी पड़े हुए हैं मनुवाद की कारा में
संगठित हो कर जुड़े नहीं मुख्य धारा में
पाजी समझ सके नहीं किसने धिक्कारा है
''बापू'' आपको अम्बेडकर ने उबारा है।

13/37, भार्गव कॉलोनी, नागदा जं.
जिला उज्जैन (म.प्र.) मोबा. 8770607747

वह भागता नहीं

महीपाल भूरिया

वह
भागता नहीं
दिखता नहीं
लूटता नहीं
चलता भी नहीं पर
बैठा ही बैठा
लाखों, करोड़ों
और कुछ सालों में
अरबों ही अरबों
खा जाता है
मेरी सारी राहत
और कमाई
फिर भी–
कौन कहता है

उसे चोर
कौन जानता है
वह है चोर
कौन कहता है उसे
वही है बड़ा बेईमान
केवल–
मुझे ही
जो ले आता है
गाय–बकरी, बैल–भैंस
चोर
पर–
कोई और है
असली चोर!

भीली भाषा परिषद
मेघनगर–457779, जिला–झाबुआ (म.प्र.)

अखण्ड भारत

डॉ. धीरजभाई वणकर

सच–सच कहूँ
जन्म लेने के बाद
इन्सान बँट जाते हैं
अलग–अलग जातियों में
अलग–अलग धर्म में
अलग–अलग सम्प्रदायों में
अलग–अलग बस्ती में
अलग–अलग टोलियों में
अलग–अलग खेमे में
अलग–अलग 'वाद' में
अलग–अलग डफली बजाते
और खड़ी करते है
बड़ी–बड़ी मजबूत दीवारें
जिसे तोड़ना मुश्किल हो जाता है,
दरअसल!
देश की अखण्डता के लिए
यह बड़ा खतरा बन जाता
आओ हम सभी 'टूटे' नहीं
पर 'जुड़े' मातृभूमि खातिर
अखण्ड भारत को सार्थक करने

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
जी.एल.एस. कॉलेज फॉर गर्ल्स, दीनबाई टॉवर केसामने,
लाल दरवाजा – अहमदाबाद (गुजरात) पिन. – 380001
मो. 09638437011

आरक्षण का आधार

डॉ. सुरेश उजाला

समय साक्षी है
इतिहास की
सबसे क्रूरतम
और
अमानवीय घटनायें हैं

राम के समय में
शम्बूक–वध
और
कृष्ण के समय में
एकलव्य का अंगूठा
काटा जाना।

जिनका आधार
आर्थिक नहीं
जातिगत था

अतएव
आरक्षण
पिछड़े और वंचित
लोगों को
समाज की
मुख्य धारा में लाना
और
उनके जीवन–स्तर को
बेहतर बनाने की
वैकल्पिक–व्यवस्था है।

जिसका आधार
आर्थिक नहीं
सामाजिक पिछड़ापन है

माफ करना
गरीब कोई भी
कहीं
और
कभी भी हो सकता है।
धन्यवाद।

108, तकरोही,
पं. दीनदयालपुरम् मार्ग, इन्दिरा नगर,
लखनऊ –227105(उ.प्र.)
मोबा. 9451144480

वो नीम

डॉ. सुभाष नारायण भालेराव 'गोविन्द'

मेरे घर के बाहर
वो नीम
जिसकी ठण्डक से
सारा घर शीतल
ठण्डी हवा का
आना–जाना, ऐसे वक्त
एक दिन वो
गहरी पसरी रात
शोरगुल सारा शहर का
थमा–थमा सा

नीम के पेड़ की आड़ में
वो श्वेत धबल चन्द्र
उस चन्द्र को बनाया किसने
मन्द–मन्द हवा का झोका
चन्द्रा ओढ़े नीम
एक छोड़ता विश्वास
पल भर बाबर के
तृप्त मन का बनाव
खोया हुआ देहभान
उमड़ती कलि को
देता हुआ हुंकार का दान
रात रूकी अंधियारी
कुछ भी पहचानती
क्षितीज के एक तरफ
दिन भर नभ लेते
चन्द्र हुआ शून्य की तरफ
दिन भर नभ लेते
चन्द्र हुआ शून्य की तरफ
सब कुछ धुंध का सहवास
रात हो गई अंधी
हो गया नीर उदास।

'अवन्तिका' ए–38, न्यू नेहरू कॉलोनी
ठाठीपुर, मुरार, ग्वालियर–474011 (म.प्र.)
मोबा. 8989598860

शेखर की दो रचनाएँ –

1. सीमा पार की आहटें

भैय्ये,
विभाजन की मानसिकता मुफ्त में मरती है
अथवा टूट–फूट का इशारा करने से डरती है।
यह कौन सी सीमा रेखाएँ और व्यवस्था की मर्यादाएं,
यौद्धाओं की सरेआम फजिती कर
पानिपत के युद्ध को लज्जित करती है?
और फिर एक नई पौध एवं फसल
दिवालिया अथवा दब्बू होकर उभरती है।
यह जूठन दंभ की खोखला करने को उतारू सनातन दीमक
गाँव–गाँव में घोंसला करती है।
भैय्ये,
अहिंसावाद का ढ़िंढ़ोरा पीटने वाले इस देश में
किटनाशक गौरय्या दुर्लभता की राह पर
क्यों चलती है ?
यह मेरी कविता बिना किसी भूमिका में भी
क्यूँ हस्तक्षेप करती है ?

आजादी के इन सत्तर सालों में
विभाजन की दुर्बल हरकतें दिनों–दिन बढ़ती है
और साथ में
आधी आबादी के अस्तित्व की अनदेखी परवान चढ़ती है
इतिहास की पुस्तक ऐसा जुर्म क्यों करती है?

भैय्ये
मुझे जिज्ञासा है कि
पति परमेश्वर से लेकर मजाजी खुदा
अथवा शौहर तक के शाब्दिक सफर में
इस देश की संस्कृति ऐसे कौन से सौंदर्य बोध से युक्त
प्रसाधन का अमल करती है ?
अथवा धर्म को खलनायकों से ही क्यों चिरपरिचित हमदर्दी है?
कोई बताए कि साक्षात् परमेश्वर की ऐसी कैसी टुच्ची मर्जी है?
वे विज्ञान और सौंदर्यशास्त्र को विदेशों से ढोकर लाते है
और फिर योग्यता की डींगे हाँकते हुए
चूहों की भाँति कुतर–कुतर कर खाते है
या राजनीतिक रंगमंच के नेपथ्य से ही तीर चला–चलाकर
सूत्रधार को ही जबरन जहर का प्याला देते है
अथवा कौम को कमजोर करने का अभियान चलाते हैं।

किन्तु भैय्ये,
विभाजन के वजूद चिन्हित होते ही
वे विवादों को घसीट–घसीटकर दरबार से पीटते हुए
दौड़ा–दौड़ाकर सड़क पर लाते है
और आखिरकार उनके हाथ
असुरों के रक्तबीज जानकर हम पर ही छूट जाते है।

भैय्ये,
यथासंभव सीमा पर की उछाले मारती आहटें इतराती है
और मस्ती में झूमकर ख्याली पुलाव खाती है
या बार–बार तबाही मचाती है।
दंभ हमेशा अक्ल से आँखें चुराती है।

2. अस्त–बल के घोड़े

जनवादी सरकार में भी
महाजन तो ठीक–ठाक से पलते–बढ़ते है
सवाल है कि इस गौरवशाली लोकतंत्र में
किसान क्यों मुफ्त में मरते हैं?

हमारे कुछ होनहार एवं स्वनामधन्य दार्शनिक या चिन्तक
केवल अर्थशास्त्रीय व्याख्या अथवा मीमांसा को ही
कोल्हू के बैल की तरह सिर पर धरते है।

इसीलिए वे हड़बड़ी और खुशी–खुशी अथवा अत्यधिक प्रसन्नता में
वामपंथी विचारधारा की पाठशाला में आँखों पर पट्टी बाँधे प्रवेश करते हैं
फिर बड़े अंतराल के बाद
अधेड़ अवस्था में आखिरकार
निष्कासित अथवा बहिष्कृत होकर बिना चेहरे के बाहर निकलते है
बोलचाल की भाषा में यदि कहना चाहूं तो
स्थापित उन्हें बेआबरु कर तत्काल खदेड़ते हैं।

किन्तु, फिर भी वे सम्मानजनक जीने की तमन्ना में
अंधियारी कोठरी में भी अपने लिए रोशनी बाकायदा खरोंचते है
और फिर वे अति उत्साह से सुसज्जित होकर
सुबह के भूले और बौधिक रूप से थके–हारे शाम को प्रबुद्ध होकर लोटते है
और ना लगे किसी को कानों खबर
इस बात की सतर्कता बरतकर
दलित साहित्य में आमूल–चूल हस्तक्षेप करते है।

जी हाँ भैय्ये, जिसे कहते है विमर्श में
आम्बेडकरवादी साहित्य की अवधारणा की ब्यौछार कर
किसी पहलवान की भाँति आलोचना के अखाड़े में उतरते है।
और हम उनके इस विलोभनिय, अथवा आकर्षक तरनताल में
बिना किन्तु–परंतु किए मजे से तैरते है।

भैय्ये,
वे हमारे अपने ही तो सहोदर, लम्बे अर्से पश्चात
हमारी चेतना पर बौद्धिक विमर्श का इन्क्रोचमेन्ट अथवा अतिक्रमण
धडल्ले से और बेझिझक करते है।
और हम सूर्यास्त की तरह अस्त–बल के रिते–रिते, थके–हारे घोड़े
नई ऊर्जा–उमंगों की फूर्ति पाकर
उनके सदियों पीछे–पीछे जस–तस बस चुपचाप चलते है।

ए–106, हिल अपार्टमेंट, रोहिणी,
सेक्टर–13, दिल्ली–110085
मोबा. 9873843656

मुक्ति

जितेन्द्र कुमार

कभी देखा है
कूकर की सीटी से
भाप को बाहर निकलते हुए?

कितनी उतावली
कितनी बेताब
कितनी व्याकुल है वह
मुक्ति पाने के लिए
खुले आसमान में
स्वतन्त्र जाने के लिए ।

एक तुम हो
जो सदियों से ताप सहकर भी नहीं उबले
न ही मुक्त होना चाहते हो
बन्द हो गुलामी के कूकर में
सड़ रहे हो
ठहरे हुए जल की तरह।

हाँ, यह सही है
कि स्वतन्त्रता की छटपटाहट के लिए
ताप बहुत जरूरी है
परन्तु क्या इतना ताप कम है?
या मार्ग नहीं मिल रहा है?
जब हृदय में मुक्ति की अकुलाहट हो तो
एक पतला सुराख भी
अच्छा मार्ग बन जाता है ।

चिलबिली दान
चिलबिली
बाजार गोसाई,
आजमगढ़
उत्तर प्रदेश, 276127

तुम उस सुराख को ढूँढो
और उसे मुक्ति का मार्ग बनाओ
तुम्हारी शक्ति भाप की शक्ति से अधिक है
उस शक्ति को पहचानो
और संगठित होकर जोर लगाओ
तुम्हें मुक्ति अवश्य मिलेगी।

सुनामी

पुतुल मिश्र

चिड़िया ने अपना घोंसला बनाया था
दो मंजिलें मकान के ट्यूबलाइट के ऊपर
उसे बचाना था अपने बच्चों को
हवा के तेज झौकों से
धूप की गर्मी से और
बर्षात् की तेज बूँदों से
चतुर चिड़िया समझती थी
उस मकान में सुरक्षित रहेंगे
उसके बच्चे।
पर हाय रे सुनामी
मकान के साथ चिड़िया के बच्चे भी
पानी में बहने लगे, वह सहायता मांगते रहे
चिल्लाते रहे चींचीं करते रहे
पर उस अथाह जलराशि के बीच
उनका कोई सुनने वाला नहीं था।

मिलनपल्ली/मुकुन्ददास रोड
सिलीगुड़ी/दार्जिलिंग–734005 (पं.बं.)
मोबा. 9126195155

जिन्दगी की डायरी

आर.एस. वर्मा (एड.)

जिन्दगी की डायरी से कोरे सिद्धान्तों के सुनहरे पन्ने उखड़ गए हैं।
महत्वाकांक्षाओं के चित्र धुंधलाकर दीमकों के उदरस्त हो गए
और एक सख्त, खुरदुरी जिल्द बाकी बची है, मेरे हाथ में
जिसका अब कोई मूल्य नहीं है।

कुतरे हुए शब्दों से, अब केवल धुआँ निकलने लगा है
हवा के एक झोंके की उसे जरूरत हैं, हो सके तो उधार दे देना।
कसम कलम की ठीक समय पर लैटा दूंगा। तुम्हारी अमानत तुम्हें।
जिन्दगी कब किसकी शाश्वत रही है, जो रहेगी तुम्हारी/हमारी
सोचना जरूरी है, प्रश्नवाचक चिन्ह रुबरु खड़ा है।
कैसे गुजरेगी मुसीबत भरी ये बेमतलब जिन्दगी–
जिन्दगी गीली लकड़ियाँ होती है, पल–पल सुलगती है।
तिल–तिल कर जलती है।

नये, धुले, प्रेसबन्द कपड़े पहन लेने से जिन्दगी कहाँ संवरती है
मुरझाया फूल भले दिन भर इतराता रहे, अपने वजूद पर
मगर खुशबू के बगैर जिन्दा लाश लगता है।

जैसे अंधी स्त्रियों के लिये, सात गज की चुनरी
और कटी नाक पर बहुमूल्य नथनी, बेकार लगती है
जिन्दगी जीने के लिये, सपनों का होना जरूरी है
और सपनों के लिये सुकून जो अब मेरे पास बचा ही नहीं है।

चला करते थे कभी हमारी ही अंगुली पकड़कर वो हमीं पर
हुकूमत करने लगे हैं। देखना हो तो देख जरा वो चिलचिलाती धूप में
महफूज और तरबतर है, और एक हम है कि,
ठोकरों पर ठोकरें खाकर भी प्यासे के प्यासे हैं

रहती है शिकायत मेरी हरदम चाँदनी से, कल भी उधर थी
आज भी उधर ही है उनकी नजरों में जो फर्क आया
वो किसकी खता है किसका असर है।

हकीकत तो यह है कि जिन्दगी कल भी अकेली थी
आज भी अकेली है, जीने का अपना–अपना हुनर और तरीका होता है
कौन किस तरह जीता है। आपको पता हो तो मुझे भी बताना।

23, अर्चना परिसर, रिंग रोड, उज्जैन
मोबा. 99266 31925

बुढ़ापा

आर.के. भारद्वाज

मानव की
तीन अवस्थाएँ हैं
बचपन, जवानी और बुढ़ापा
लाता है बचपन, सौगातें
जवानी लाती है, करामातें

लेकिन बुढ़ापा लाता है
दुर्बलता, विवशता, निर्भरता
जवानी में जो करते हैं
मौज–मस्ती की अति
होता नहीं बुढ़ापा उनका सुखकर
बुढ़ापे में होती है, उनकी दुर्गति
जवानी में जो उड़ाते हैं
बूढ़ों का मजाक करते हैं
उनका तिरस्कार और देखते हैं, उन्हें
हेय दृष्टि से, बूढ़ा होने पर
उनका कोई नहीं करता
मान–सम्मान, आदर–सत्कार
देता है, हर कोई दुत्कार–फटकार
कर देता है तिरस्कार
चाहते हो, बुढ़ापे में
न होना पड़े अपमानित–तिरस्कृत
तो जवानी में रखो
अपने पर नियंत्रण और
बूढ़ों को दो तरजीह
बुढ़ापे का आभूषण है
मीठी बोली और देना सबको आशीर्वाद
ऐसा करते, उनका मन
रहता सदा प्रफुल्लित ओर
पाते सर्वत्र आदर सत्कार
बुढ़ापा अभिशाप नहीं है
अनुभवों का खजाना, जाने दो
मत उसे व्यर्थ, लगा दो
उसे परमार्थ में।

चर्च के पीछे, भरतपुर (राज.)

एक बूढ़े की अंतिम प्रार्थना

✍ **डॉ. लक्ष्मी निधि**

पहले हम देखते थे,
गाँव में किसी का घर गिर जाये,
तो लोग, उसके छप्पर को,
हाथों–हाथो उठा लेते थे,
अब तो अपना बेटा भी
अपने बाप की अर्थी में
कंधा देने से कतराता है
माजरा क्या है, समझ में नहीं आता है!

इसलिए, हे परमेश्वर! हे करुणा निधान!
कृपा कर मेरी प्रार्थना पर
दीजिए अपना ध्यान, जब मैं मरूँ,
तो इतना करना चमत्कार

मैं अपना कफन खरीदने के लिए
खुद ही चला जाऊँ बाजार!
यदि मैं बाजार नहीं जाऊँगा,
तो बिना कफन दफनाया जाऊँगा!

हे दयालू! हे कृपालु! इतनी शक्ति देना।
कि मैं अपनी चिता खुद ही सजाऊँ
और उस पर खुद जाकर लेट जाऊँ
अपनी चिता में खुद ही आग लगाऊँ!

अगर, ऐसा नही हुआ तो,
मेरा बेटा मेरा दाह संस्कार नहीं करेगा,
और मेरी लाश को,
गिद्ध नोच–नोच कर खा जायेगा।

अब, अपने माँ–बाप के लिए
कहाँ कोई बेटा रोता है।
जल्दी से बुढ़वा मर जाये
उसके मन में यही होता है।

बाप के मरने पर, बेटा
उसका बटुआ खोलता है,
बाप की जलती चिता में, उसकी कमर से बेटा
तिजोरी की चाभी टटोलता है।

निधि विहार 172, न्यूबाराद्वारी,
ह्यूम पाईप रोड (नया कोर्ट रोड)
पो. साकची, जमशेदपुर–1 (झारखण्ड)
मोबा. 09934521954

मुरदा गंध

हरदान हर्ष

गोल–गोल आँखें घुमाते हुए
झपट्टे मार रहे हैं गिद्ध
लार टपकाते हुए
सूंघ रहे हैं वे
परिवेश में व्याप्त मुरदा गंध।
अकारथ है
मण्डराते गिद्धों पर रिरियाना
बेमानी है
कापालिक के हाथ
खून का तब्बर देखकर
पीले पड़ जाना।
समय रहते हमें ढूढ़ना है
अपने–अपने घर गुवाड़ों में
वह सब
जो सड़ रहा है
हमारी थूथन में।
दक्ष हैं बहुत
मण्डराते हुए गिद्ध
सूंघकर सब समझ लेते हैं
कि करना होगा
सड़ा, गला, गंधाता, मृतप्रायः
वह सब दफन
माटी में।
यह सच
हमारे परिवेश की
मुरदा गंध की करती है
गिद्ध आमंत्रण।

ए–306, महेश नगर, जयपुर–302015
मोबा. 9785807115

ग़ज़ल

जगदीश तिवारी

गीत मेरा गुनगुनाया कीजिए
हर क़दम पे मुस्कुराया कीजिए

ख़्वाब में हर रोज़ आया कीजिए
ज़ाम उल्फ़त का पिलाया कीजिए

ज़िन्दगी भर आप हँसते ही रहो
चाँदनी सा दमदमाया कीजिए

जो भी करना आज कर दो फैसला
वक़्त ये ऐसे न ज़ाया कीजिए

मील का पत्थर बनो तो बात है
दूर से ही मत लुभाया कीजिए

आदमी हो आदमी बनकर रहो
आदमी से दिल लगाया कीजिए

बात कहकर यूँ गलत 'जगदीश' जी
दिल किसी का मत जलाया कीजिए।

3–क–63, सेक्टर–5
हिरन मगरी, उदयपुर–313002 (राज.)
मोबा. 09351124552

ग़ज़ल

रमेश मनोहरा

जब से वो मेहनत का शहरीर उठाने लगा है
तब से वो विश्व का मजदूर कहलाने लगा है।

गे अपराधी है अतः कानून को देता लिफाफा
इसलिए कानून उसको ही बचाने लगा है।

सियासत तो बन गई है मित्रो उनके लिए खेल
जहाँ पर वो धीरे–धीरे पांव जमाने लगा है।

पहले तो तरक़ीब से भोंकता है पीठ में खंजर
फिर उसके घाव को प्रेम से सहलाने लगा है।

गीत, ग़ज़ल, रूबाई, दोहे सब गाने की चीजें हैं
उनको गाता देखें वो भी बेसूरा गाने लगा है।

जो भी मसीहा आता है 'होरी' से वोट मांगने
नित नये नारों से रमेश को बहलाने लगा है।

शीतला माता गली, जावरा,
जिला रतलाम–457226 (म.प्र.)
मोबा. 9479662215

आह्वान

सरदार पंछी

होके हवा के परों पे सवार।
आओ चल दें सितारों के पार।
ग़म नहीं है ज़रा भी कि हम चल पड़े,
ले के नाज़ुक क़दम राह–ए–दुश्वार पर।
हम न ठहरें गे मंन्ज़िल से पहले कहीं,
हम को तो नाज़ है अपनी रफ़्तार पर।
हम को रफ़्तार ही से प्यार।
आओ चल दें सितारों के पार।
जब इरादा हमारा है चट्टान सा,
कैसा मुश्किल सफ़र कैसी अब दूरियाँ।
अब न होगा अंधेरों का शासन कहीं,
अब न होगी उजालों की मजबूरियाँ।
हर तरफ़ रौशनी की बहार।
आओ चल दें सितारों के पार।
होती है माथे पर तीसरी आँख भी,
खोलें गे तीसरी आँख इन्सान की।
पैदा कर देंगे मानव में हम चेतना,
अस्ल में यह ही पूजा है भगवान की।
यह उजालों का है सभ्यचार।
आओ चल दें सितारों के पार।
होके हवा के परों पे सवार।
आओ चल दें सितारों के पार।

जेठी नगर, मालेर कोटला रोड, खन्ना–141401 (पंजाब)
मोबा. 94170 91668

कुण्डलियाँ नोवेल कोरोना

रहमान अली 'रहमान'

दहशत का माहौल है, कोरोना से आज।
हो जाओ सब जागरुक, तत्क्षण करें इलाज।।
तत्क्षण करें इलाज, जिन्दगी सबको प्यारी।
जीवन जीओ मस्त, भगाकर दूर बिमारी।।
कहते कवि 'रहमान', खुदा तू कर दे रहमत।
कोरोना हो खत्म, मिटे अब जग से दहशत।।

सहमा–सहमा लग रहा, अपना हिन्दुस्तान।
जनता कर्फ्यू लगाकर पी.एम. बने महान।।
पी.एम. बने महान, देश की चिन्ता भारी।
जल्दी मिले निजात, इसलिए कर्फ्यू जारी।।
कहते कवि 'रहमान', दौर है गहमी–गहमा।
जीवन है बेकार, आदमी सहमा–सहमा।।

ई–रिक्शा चालक
ग्राम व पो. धवाय (धोवही) – 272194
जनपद–बस्ती (उ.प्र.)
मोबा. 9935292486

गीत

सदाशिव कौतुक

दलित भाई ओ दलित
कौन कहता तू दलित
तू तो है स्वचलित
तू तो है स्वचलित।

(1)

सदियों तू ने मैला ढोया
सदियों–सदियों चैन खोया
बासी खाया–जूठा खाया
नहीं मिला तो भूखा सोया।
सद्कर्म बाबा साहब का
अब होने लगा फलित
दलित भाई ओ दलित....

(2)

पशु से बदतर जीवन जीकर
सदियों तक ज़हर ये पीकर
शूल सीने में धँसते–धँसते
सहा सदियों हँसते–हँसते।
निरक्षर रहकर हो गई
कई पीढ़ियाँ काल कवलित
दलित भाई ओ दलित....

(3)

शपथ स्वच्छता की लेकर
जीवन समाज को देकर
हुआ तुम पर गौर नहीं
मसीहा बाबा सा और नहीं
रहा राष्ट्र की सेवा में
अभिमान से सदा रहित
दलित भाई ओ दलित
कौन कहता तू दलित
तू तो है स्वचलित
तू तो है स्वचलित।

'श्रमफल' 1520, सुदामा नगर, इन्दौर–9
मोबा. 98930 34149

हाइकू

भवानी शंकर 'तोसिक'

1. जुल्म सहता,
   विरोध न करना,
   भूल मेरी थी।।
2. जला डालेंगे,
   बस्तियाँ ये तुम्हारी,
   सोते रहे तो।।
3. निर्धन व्यक्ति,
   अमीरों की बस्ती में,
   नाली का कीड़ा ।।
4. मैं मौन रहा,
   चुप तुम भी रहे,
   दोषी दोनों हैं।।
5. दलित लोगों,
   अधिकार नहीं है,
   तुम्हें जीने का।।
6. उजाड़ देंगे,
   आशियाना तुम्हारा,
   मौन रहे तो।।
7. खेद है हमें,
   रुकावट के लिए
   श्रेष्ठ तरीका।।
8. हर महिला,
   लठैतों के राज में,
   पाँव की जूती।।

आदर्श कॉलोनी, गोविन्दगढ़ रोड, चौराहा
पिसांगन, जिला अजमेर–305204 (राज.)
मोबा. 9414746591

हाइकू : हार–जीत

रितेन्द्र अग्रवाल

(1)

हार या जीत
दो के इस खेल में
जीतेगा एक।

(2)

हौंसला रखो
हिम्मत से खेलो
जीतोगे तभी।

(3)

निराशा नहीं
आशा बनाये रखो
तभी सफल

(4)

हार से दुःखी
जीत से खुशी होना
उचित नहीं।

(5)

जीत या हार
एक–सा रहना है
सही संस्कार।

(6)

आज हारोगे
तभी कल जीतोगे
यही सिद्धान्त

(7)

आज की हार
कल की सफलता
का आधार है।

11/500, मालवीय नगर
जयपुर–302017 (राज.)

डॉ. जयसिंह अलवरी की क्षणिकाएँ :–

1. कल्पनाशील

भूल अपनी पीड़ा
औरों की पीड़ा को
अपनी कहने वाला
रात–रात भर जगकर
सच सब लिखने वाला।
अपनी माली,
और तंगहाली को
सदा हंसके सहता
और जीता है।

2. क्षण में

कोरे भाषणों
और
झूठे आश्वासनों से
लम्बे समय तक
बहलाने वाले बेहरूपिये
सदा संवेदना के
आँसू बहाकर
स्वार्थ अपना साधते है।

3. खोते रहे

भूल अपनी पीड़ा
औरों की पीड़ा में
सदा रोते रहे हम।
दिल का हर सुकून
हर दिन हर पल
खोते रहे हम।।

4. दृढ़ मन से

किसी राह के
काँटे नहीं
पुष्प बन
सदा मुस्कुराओं।
बैर–द्वैष ईर्ष्या
सबको दृढ़ मन से
ठुकराओं।।

5. अजब

उनके अपने
अजब कायदे है
सबमें सदा
फायदे है।

सम्पादक–साहित्य सरोवर
न्यू दिल्ली हाऊस, नियर, बस स्टेण्ड, सिरुगुप्पा–583121
जिला–बल्लारी (कर्नाटक)
मोबा. 09886536450

लघुकथाएँ

किशनलाल शर्मा की दो लघुकथाएँ –

पत्नी

तुम तो औरतों को शिक्षा देती हो...

रमा समाजसेविका थी। वह औरतों के सशक्तिकरण के लिए कार्य करती थी। वह औरतों से कहती थी, 'दरवाजे के पीछे बन्द कमरों में होने वाली हिंसा को बर्दाश्त नहीं करना है। आवाज उठानी है''...

लेकिन मीरा देखती थी। दूसरी औरतों को शिक्षा देने वाली रमा के घर से अक्सर सिसकियों की आवाज

आती रहती थी। उसका पति दारू पीकर आता और बात–बात पर गाली–गलौच और मारपीट करता। एक दिन मीरा ने पूछ लिया, और तुम ही हिंसा का शिकार होती हो फिर भी...

''बाहर में दूसरों के लिए औरत हूँ, पर घर में पत्नी', रमा बोली, और पत्नी को सब सहना पड़ता है।

जलदण्ड

टंकी से पानी बहता देखकर राघव का पारा सातवें आसमान पर जा पहुँचा।

''पानी की हर बूंद को बचाये। जल ही जीवन है। जल सुरक्षित रहेगा, तो ही हम रहेगे।

केन्द्र से आयी रिपोर्ट पढ़कर डी.एम. राघव ने अपने कार्यालय के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों की मीटिंग बुलाई थी। जल का महत्व समझाते हुए वह बोले, हमें पानी बिलकुल बर्बाद नहीं करना है। धुलाई कार्य के लिए पानी जहां जरूरी हो, वहीं प्रयोग में लायें। अन्यथा पोंछे या झाडू से काम चलाये।

सभी से सुझाव लिये गये और कार्यालय आदेश निकाल दिया गया। सबको शपथ दिलाई गई कि पानी की हर बूंद को बचायेंगे।

कल ही डी.एम. ने पानी बचाने के निर्देश दिये थे और आज ही पानी टंकी से व्यर्थ बह रहा था। ऑफिस में आते ही राघव चपरासी से बोले, ये क्लर्क को बुलाओ।

नरेश तुरन्त चला आया। राघव दस हजार का जलदण्ड के आदेश देते हुए बोले, सबकी पगार से बराबर का पैसा काटा मेरे से भी।

राघव ने सभी को चेताया था।

पानी बचाने की जिम्मेदारी हम सबकी है। इस बार केवल दस हजार का दण्ड लगाया है। अगली बार ज्यादा लगाऊँगा।

103, रामस्वरूप कॉलोनी
शाहगंज, आगरा–282010 (उ.प्र.)
मोबा. 09760617001

कड़वा सत्य

बी.एल. परमार

नगर के पुलिस थाने में बदली होकर नए टीआई पदस्थ हुए। ज्ञात हुआ कि वे आरक्षित वर्ग के हैं। कट्सी में समाज के दो–चार व्यक्ति उनसे मुलाकात करने थाने पहुँच गए। जाकर सादर अभिवादन किया।

टीआई साहब ने पूछा कैसे आए हो?

एक व्यक्ति ने कहा–सर काम तो कुछ नहीं है किंतु आप अनुसूचित जाति के हैं। समाज के नाते आपसे सौजन्यतावश भेंट करने चले आए। हमें खुशी और गर्व है कि हमारे वर्ग के अधिकारी नगर में आए।

टीआई साहब ने कहा–देखिए मैं जाति–वाति में विश्वास नहीं रखता हूँ। गोल्डमेडलिस्ट हूँ। आरक्षण का लाभ लेकर नौकरी में नहीं आया हूँ। मैं सवर्ण कोटे से नियुक्त हुआ हूँ। आपकी यह जातिवादी ओछी मानसिकता निकाल दीजिए। आरक्षण से कुछ नहीं होता। पढ़–लिखकर कोई भी व्यक्ति महान बन सकता है।

आए हुए आगन्तुक में से एक व्यक्ति ने पूछा–सर आपके पिताश्री क्या करते हैं?

टीआई साहब ने कहा–वे पढ़े–लिखे नहीं है, खेती करते हैं।

व्यक्ति ने कहा–वे पढ़े–लिखे क्यों नहीं है?

टीआई साहब ने कहा–पढ़ने का अवसर नहीं मिला। स्कूल नहीं थे, उनमें मूलनिवासी को प्रवेश नहीं देते थे।

सर–फिर आप कैसे पढ़ गए?

टीआई साहब ने कहा–कठोर परिश्रम करके।

व्यक्ति ने कहा–सर! मूल निवासियों को विश्व विद्वान, शिक्षाविद् भारतरत्न, संविधान शिल्पी

बाबासाहेब डॉ. अम्बेडकर ने संविधान में विशेष प्रावधान करके पढ़ने का अधिकार दिलाया है। उसी के तहत आप भी छात्रवृत्ति लेकर पढ़े और टीआई बने हैं। यदि बाबासाहेब शिक्षा का अधिकार नहीं दिलाते तो आप भी अपने पिता की तरह अशिक्षित ही रहते।

सुनकर टीआई साहब की भोंहे तन गई, किंतु मौन रहे।

समाज के आए हुए महानुभावों से सभ्यता, सम्मानपूर्वक नम्रता से व्यवहार करने के बजाय आरक्षण धारी टीआई साहब ने अपने ही वर्ग पर वर्दी का रुआब झाड़ दिया।

ऐसे अज्ञानी, मगरुर लोग बाबासाहेब के त्याग, बलिदान को क्या समझेंगे? वे तो जो कुछ भी हैं सब स्वयं की ही उपलब्धि मानते हैं। ऐसे ही एहसान फरामोश लोगों ने बाबासाहेब व समाज को धोखा दिया है।

बाबा साहेब को विश्वास था कि मूलनिवासी पढ़–लिखकर पदों पर आसीन होंगे और दमित, शोषित, पीड़ित, अशिक्षित समाज की तन, मन, धन से सेवा करेंगे, किंतु ऐसा नहीं हुआ। निष्ठुर अपने ही वर्ग से दुत्कार कर बात करते हैं।

13/37, भार्गव कॉलोनी, नागदा जं.
जिला उज्जैन-456335 (म.प्र.) मोबा. 8770607747

सायबर क्राईम्स

✍ **मधु हातेकर**

इन्टरनेट–साईबर क्राईम्स का सबसे ज्यादा बुरा असर मासूम–निरागस बच्चों पर हो रहा है। घर में मम्मी–पापा, भाई–बहन के पास मोबाईल होने से सहज ही 5–6 साल के हाथों में भी मोबाईल आ गया है और मोबाईल पर गेम खेलने लग जाते है और धीरे–धीरे गेम खेलने के इतने अधिक आदि हो जाते हैं कि मोबाईल कोशिश करने पर भी उनके हाथ से छूटता ही नहीं और उनके आंखों पर चश्मा आ जाता है। आजकल स्कूल से दिये जाने वाले लेसन और नोटिस भी मोबाईल पर दिये जाने लगे है। मोबाईल स्कूल के लिए आवश्यक होने से मां–बाप उन्हे मोबाईल लेके देते हैं। मोबाईल में लेसन देखते हुए बच्चे गेम खेलने लग जाते है। फ्रेण्ड्स को मैसेजेस भेजने उनके मेसैजेस लेने लग जाते है। यही सब देखते–देखते जो उन्हें नहीं देखना चाहिए वो भी उनके देखने में आता है। कुछ फालतू लोग अश्लील फोटो और मेसेजेस् भी मोबाईल पर मेल करते रहते हैं। सहसा वो भी उनके देखने में और पढ़ने में भी आ जाते हैं। इसका उनके निरागस मन–मस्तिष्क पर काफी असर होता होगा यह भी सोचनीय बात है।

आजकल अधिकांश घरों में एक ही बच्चा होने से मां–बाप उसे बहुत लाड़–प्यार से पालते है। उसको उसके मनपसन्द कपड़े, मन–पसन्द खिलौने लेकर देते हैं। उसे सहज ही ये सब मिलने से उसकी हर जिद पूरी करने के लिए मां–बाप को मनवा लेता है। धीरे–धीरे मां–बाप भी उसकी जिद पूरी करने के लिए मजबूर हो जाते है। आठवीं पढ़ने वाला बंटी स्कूल से घर आते ही स्कूल बेग एक तरफ फेंक शूज पहिने बेड पर जाकर सो गया, मम्मी–पापा ने आकर पूछा–क्या हुआ बेटा, बन्टी–मम्मी मुझे सेमसेन 56 मोबाईल चाहिए। मम्मी–बेटा, वह बहुत कास्टली है। हम अभी नहीं ले सकते, ये मोबाईल है ना, ये आऊट ऑफ डेट हो गया, मुझे सेमसन–56 ही चाहिए उसके मम्मी–पापा मध्यमवर्गीय थे। उसे मोबाईल ले देने में असमर्थ थे। बंटी को बहुत समझाया पर वो नहीं माना और एक दिन अपने घर की गेलरी से नीचे कूद पड़ा। किस्मत अच्छी थी एक हाथ–पांव फ्रेक्चर हो गया और भगवान् की कृपा से वो बच गया ज्याादा शारीरिक हानि नहीं हुई।

बारहवीं में ईशा को 94 प्रतिशत मार्क्स मिले सभी को बहुत खुशी हुई, पर सबसे ज्यादा खुशी हुई उसके पापा को उन्होंने ईशा को एक मोबाईल लेके दिया, सारे फ्रेण्ड्स को दिखाती फिरती थी। मेरिट में आने से उसे

बी.ई. फर्स्ट इयर में एडमिशन भी मिल गया। उसके पापा को इतनी अधिक खुशी हुई कि पापा ने नई एक्टीवा ले के दी। ईशा अब एक्टीवा पर कॉलेज जाने लगी। अपने फ्रेण्ड्स को मैसेजेस भेजना उनके आये मेसेजेस पढ़ने में काफी समय जाने लगा ऐसे ही मैं उसे सेल्फी निकालने की एक और नई आदत लग गई। नये–नये गेट में सेल्फी निकालकर फेसबुक पर फ्रेण्ड्स को भेजने और उस आये मेसेजेस को पढ़ने में उसका काफी समय जाने लगा। इसका असर उसकी पढ़ाई पर होने लगा। दिनों–दिन सेल्फी निकालने का ये दिवानापन बढ़ता गया और पढ़ाई तरफ दुर्लक्ष होने लगी। कॉलेज के कुछ खास फ्रेण्ड्स के साथ लोनावला पिकनिक जाने का प्लान। पापा ने भी बेटी की खुशी के लिए उसे खुशी–खुशी पिकनिक पर जाने की अनुमति दे दी। पिकनिक को बहुत इंजाय किया पर वहां भी सेल्फी निकालने का मोह नहीं छूटा। अलग–अलग प्रेक्षणीय स्थलों पर अपनी सेल्फी निकाली। टक मोक टोक पर अपनी सेल्फी निकालते–निकालते अचानक उसका पैर फिसला और ईशा ऊपर से नीचे गिरी। सुरक्षा रक्षकों ने किसी तरह बाहर निकाला पर ईशा को बचा न सके। सेल्फी निकालने की दिवानेपन के कारण इशा को अपनी जान गंवानी पड़ी। उसके मम्मी–पापा को कितना दुःख हुआ होगा, इसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते।

आधुनिक टेक्नोलॉजी के कारण हम हजारों लोगों के पास पहुंच गये हैं। पर अपनों से दूर जा रहे हैं। दिनों–दिन हम तंत्र ज्ञान के गुलाम होते जा रहे हैं। हम टेक्नासेव्ही होते ही जा रहे हैं। इसे फोबिंग कहने लगे है। फोबिंग या स्मार्ट पर कुछ न कुछ करने के कारण एक ही घर में 3–4 व्यक्तियों के साथ रहते हुए भी अपनों के प्रति दुर्लक्ष होता जा रहा है। परस्पर संवाद नहीं हो पा रहा है। स्मार्ट फोन के कारण दूर के लोग पास आ रहे हैं। उनसे घनिष्ठता बढ़ती जा रही है पर अपनों से कहीं दूर–दूर जा रहे हैं हम।

6, लुंकड एव्हिन्यू, विमान नगर,
पुणे-14 (महाराष्ट्र)

आपकी पाती, हमारी थाती

11/500, मालवीय नगर, जयपुर–302017
दि. 29.06.2020

महोदय,

आप द्वारा प्रेषित आश्वस्त का मार्च 2020 अंक मिला। अच्छा लगा। हमेशा की तरह साधारण सरल–सा। पढ़ने पर महसूस हुआ अपनी बात के अंतर्गत आपने समसामयिक एवं सटीक विचार रखे है। आपने सही कहा महिला की स्थिति सुधारने के लिये पुरुष को महिला के अस्तित्व को समझना एवम् स्वीकारना होगा। महिलाओं को भी गरिमा में बँधना होगा।

आपके भागीरथ प्रयास को साधुवाद।

मैं बेटी पर हाइकू प्रेषित कर रहा हूँ। स्वीकारें।

यथायोग्य के साथ
भवदीय
रितेन्द्र

छंटनी

प्रसिद्ध साहित्यकार जान रस्किन का किसी विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया था। विषय तथा तिथि की भी घोषणा कर दी गई थी। नियत तिथि पर लोगों की भीड़ भी इकट्ठी हुई पर रस्किन ने संदेश भिजवाया कि भाषण आज नहीं कल होगा। अगले दिन फिर लोग आये पर कल की तुलना में कम थे।

रस्किन ने फिर आना अगले दिन के लिए स्थगित कर दिया। लोग निराश मन से फिर लौट गये। अगले दिन फिर भीड़ जुटी पर दोनों दिन की तुलना में कम थी। जान रस्किन उस दिन आये और भीड़ देखकर बोले–''भाइयो! अब ठीक है काफी छंटनी हो गई है और अब यहाँ वही श्रोता है जिनकी वास्तव में इस रुचि है।'' और उन्होंने उस दिन जमकर अपनी बात ही नहीं रखी वरन् श्रोताओं की विषय संबंधी जिज्ञासाओं का उत्तर भी दिया।

ISO 9001: 2015
www.mychhotaschool.com
My Chhota School
MY CHHOTA SCHOOL
World Class Education For Everyone
YOUR FAVORITE PRE-SCHOOL COMES TO YOUR DOORSTEP
REAL SCHOOL, REAL FUN
650+ BRANCHES
26 States / 15+ Years
3 Countries
OUR PROGRAMS
PRE-NURSERY | NURSERY | LKG | UKG
Dr. Tara Parmar, Retd.DEO(District Education Officer),
9-B, Indrapuri, Sethinagar, Ujjain456010(M.P.)Mob.No.9424892775,9340352009
Email Id: tara.parmar9@gmail.com
MAKE YOUR CHILD INTELLIGENT AT OUR HOMESCHOOL

कोरोना से डरो ना,
अफवाहों में पड़ो ना।

अपनी इम्युनिटी बढ़ाओ,
और कोरोना को भगाओ।

डॉ तारा परमार
9424892775

पंजीयन संख्या
RNI No. MPHIN/2002/9510

डाक पंजीकृत क्रमांक मालवा डिविजन 204/2018-2020 उज्जैन (म.प्र.)

प्रतिष्ठा में ,

पत्र व्यवहार का पता :
20, बागपुरा, सांवेर रोड,
उज्जैन 456 010 (म.प्र.)

प्रकाशक, मुद्रक पिंकी सत्यप्रेमी ने भारती दलित साहित्य अकादमी की ओर से
मालवा ग्राफिक्स, 29, वररुचि मार्ग, गुरुद्वारे के सामने, फ्रीगंज, उज्जैन फोन : 0734-4000030 से मुदित एवं
20, बागपुरा, सांवेर रोड, उज्जैन 456 010 (म.प्र.) फोन : 0734-2518379 से प्रकाशित।

सम्पादक : डॉ. तारा परमार